M.A.(Education) Part- 1,Paper-VI,
Presented by Dr.Pallavi,
Topic- Conceptions of Research, Characteristics

3.0 अनुसंधान की अवधारणा एवं विशेषताएँ

'रि' का अंग्रेजी में अर्थ है "बार - बार तथा सर्व का अर्थ है 'खोजना'। अंग्रेजी का यह शब्द शोध की प्रक्रिया को प्रस्तुत करता है कि शोध कर्ता किसी तथ्य को बार बार देखता है जिससे उसके सम्बन्ध में प्रदतो को एकत्रित करता है तथा उनके आधार पर उसके सम्बन्ध में निष्कर्ष निकलता है।

अनुसंधान को परिभाषा से अधोलिखित विशेषताओं का उल्लेख किया जा सकता है

(1) अनुसन्धान की प्रक्रिया से नवीन ज्ञान की वृद्धि एवं विकास किया जाता है।

(2) इसमें सामान्य नियमों तथा सिद्धान्तों के प्रतिपादन पर बल दिया जाता है।

(3) अनुसन्धान की प्रक्रिया वैज्ञानिक, व्यवस्थित तथा सुनियोजित होती है।

(4) इसमें विश्वसनीय तथा वैध प्रविधियों को प्रयुक्त किया जाता है।

(5) यह तार्किक तथा वस्तुनिष्ठ प्रक्रिया है।

(6) अनुसन्धान की प्रक्रिया में प्रदत्तों के आधार पर परिकल्पनाओं को पुष्टि की जाती है।

(7) इसमें व्यक्तिगत पक्षों, भावनाओं तथा विचारों (रुचियों) को महत्त्व नहीं दिया जाता है। इन प्रभावों के लिए सावधानी जाती है।

(8) शोध-कार्य में गुणात्मक तथा परिमाणात्मक पदों की व्यवस्था की जाती है और उनका विश्लेषण करके निष्कर्ष निकाले जाते हैं।

(9) शोध-कार्य में रखना होता है तथा इसमें शीघ्रता नहीं की जा सकती है।

10) प्रत्येक शोध-कार्य को अपनी विधि तथा प्रविधियाँ होती है जो शोध कार्य के उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक होती हैं।

(11) शोध कार्य का आलेख सावधानीपूर्वक तैयार किया जाता है तथा शोध प्रबन्ध तैयार किया जाता है।

(12) प्रत्येक शोध-कार्य से निष्कर्ष निकाले जाते हैं और समान्यीकरण का प्रतिपादन किया जाता है।

ये विशेषताएँ वैज्ञानिक शोध-कार्यों की होती हैं । गुणात्मक शोध-कार्यों की विशेषतायें भिन्न होती हैं, क्योंकि इन्हें वस्तुनिष्ठ नहीं बनाया जा सकता। अर्थापन व्यक्तिगत पक्षों से प्रभावित होता है।

3.1 शिक्षा अनुसन्धान की अवधारणा (concepts of Educational Research)

शिक्षा-अनुसंधान की अनेकों परिभाषाएँ उपलव्ध है। परन्तु कुछ महत्वपूर्ण तथा व्यापक परिभाषाओं का उल्लेख अग्रलिखित प्रकार किया गया है-

एफ.एल.भिटनी के अनुसार, "शिक्षा अनुसंधान का उद्देश्य शिक्षा की समस्याओं का समाधान करके उनमें योगदान करना है जिसमें वैज्ञानिक विधि, दार्शनिक विधि तथा चिन्तन का प्रयोग किया जाता है। वैज्ञानिक स्तर पर विशिष्ट अनुभवों का मूल्यांकन और व्यवस्था की जाती है। इसके अन्तर्गत परिकल्पना का प्रतिपादन किया जाता है। इनकी पुष्टि से सिद्धान्तों का प्रतिपादन होता है, इसमें निगमन (Deductive) चिन्तन किया जाता है। दार्शनिक शोध विधि में व्यापक सामान्यीकरण किये जाते हैं जिससे सत्य एवं मूल्यों का प्रिस्थापन किया जाता है।"

'भिटनी' ने अपनी इस परिभाषा में दो प्रकार के शिक्षा-अनुसंधानों का उल्लेख किया है-वैज्ञानिक तथा दार्शनिक। वैज्ञानिक शोध कार्यों से नये सिद्धांत का प्रतिपादन किया जाता है और दार्शनिक शोध-कार्यों से नवीन सत्यों का प्रतिस्थापन किया जाता है।

मोनरों के अनुसार, "शिक्षा अनुसंधान का अन्तिम लक्ष्य सिद्धांत का प्रतिपादन करना और शिक्षा के क्षेत्र में नवीन प्रक्रियाओं का विकास करना है।"

मानरो के शिक्षा-अनुसंधान में नवोन सिद्धान्तों के प्रतिपादन के साथ उनको उपयोगिता को भी महत्त्व दिया गया। शोध निष्कर्ष की व्यावहारिक उपयोगिता 'शिक्षा-अनुसंधान' का प्रमुख मापदंड माना जाता है।

डब्ल्यू.एम. टैवर्स के अनुसार, "शिक्षा-अनुसंधान वह प्रक्रिया है जो शैक्षिक परिस्थितियों में व्यवहार विज्ञान का विकास करती है।

शिक्षा अनुसंधानों का अन्तिम लक्ष्य शिक्षण सिद्धान्तों तथा अधिनियमों का प्रतिपादन करना और शिक्षा की प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाना है।

3.2 शिक्षा अनुसंधान की अवधारणा के उद्देश्य(Conceptual Aims of Educational Research)

शिक्षा-अनुसंधान की समस्याओं में विविधता अधिक है। इसलिए इसके प्रमुख चार उद्देश्य होते हैं-

(1)सैद्धान्तिक उद्देश्य, (2)तथ्यात्मक उद्देश्य,
(3)सत्तात्मक उद्देश्य तथा (4)व्यवहारिक उद्देश्य ।इनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है

(1) सैद्धान्तिक उद्देश्य-शिक्षा-अनुसंधानों में वैज्ञानिक शोध-कार्यो द्वारा नये सिद्धान्तों तथा नये नियमों का प्रतिपादन किया जाता है। इस प्रकार के शोध-कार्य व्याख्यात्मक होते हैं। इनके अन्तर्गत घरों के सह-सम्बन्धों को व्याख्या की जाती है। इस प्रकार के शोध कार्य से प्राथमिक रूप से नवीन ज्ञान की वृद्धि को जाती है, जिनका उपयोग शिक्षा की प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाने में किया जाता है।

(2) तथ्यात्मक उद्देश्य-शिक्षा के अन्तर्गत ऐतिहासिक शोध-कार्यों द्वारा नये तथ्यों की खोज की जाती है। इनके आधार पर वर्तमान को समझने में सहायता मिलती है। इन उद्देश्यों को प्रकृति वर्णनात्मक होतो है क्योंकि तथ्यों की खोज करके, उनका अथवा घटनाओं का वर्णन किया जाता है। नवीन तथ्यों को खोज शि्षा-प्रक्रिपा के विफास तथा सुधार में सहायक होतो है।

(3) सत्यात्मक उद्देश्य-दार्शनिक 'शोध' कार्यों द्वारा नवीन सत्यों का प्रतिस्थापन किया जाता है। इनकी प्राप्ति अन्तिम प्रश्नों के उत्तरों से की जाती है। दार्शनिक शोध-कार्यों द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों, सिद्धान्तों तथा शिक्षण विधियों तथा पाठ्यक्रम को रचना की जाती है। शिक्षा की प्रक्रिया के अनुभवों का चिन्तन बौद्धिक स्तर पर किया जाता है जिससे नवीन सत्यों तथा मूल्यों का प्रतिस्थापन किया जाता है।

(4) व्यावहारिक उद्देश्य-शिक्षा-अनुसंधान के निष्कर्षों का व्यावहारिक प्रयोग होना चाहिए, परन्तु कुछ शोध-कार्यों में केवल उपयोगिता को ही महत्व दिया जाता है.। ज्ञान के क्षेत्र में योगदान नहीं होता है। इन्हें विकासात्मक अनुसन्धान भी करते हैं। क्रियात्मक अनुसन्धान से शिक्षा को प्रक्रिया में सुधार तथा विकास

किया जाता है अर्थात् इनका उद्देश्य व्यावसायिक होता है। स्थानोग समस्या के समाधान से भी इस उद्देश्य की प्राप्ति की जाती है।

3.3 शिक्षा अनुसंधान की अवधारणा

शिक्षा-अनुसंधान के उद्देश्यों से यह स्पष्ट है कि शैक्षिक अनुसंधानों का वर्गीकरण कई प्रकार से किया जा सकता है। प्रमुख वर्गीकरण के मानदण्ड अधोलिखित है:-

(1) भौतिक अनुसंधान, तथा (2) क्रियात्मक अनुसंधान

(1) मौलिक अनुसन्धान-इन शोध-कार्यों द्वारा नवीन ज्ञान की वृद्धि की जाती है । नवीन सिद्धान्तों का प्रतिपादन नवीन तथ्गों को खोज, नवीन सत्यों का प्रतिस्थापन होता है। मौलिक अनुसंधान से ज्ञान-क्षेत्र में वृद्धि की जाती है। इन
उद्देश्यों की दृष्टि तौन वर्गों में बांटा जा सकता है-

(अ) प्रयोगात्मक शोध कार्यों से नवीन सिद्धान्तों तथा नियमों का प्रतिपादन किया जाता है। सर्वेक्षण-शोध भी इसी प्रकार का योगदान करते हैं।

(ब) ऐतिहासिक शोध कार्यों से नवीन तथ्यों की खोज की जाती है, जिनमें अतीत का अध्ययन किया जाता है और उनके आधार पर वर्तमान को समझने का प्रयास किया जाता है।

(स) दार्शनिक शोध कार्यों से नबीन सत्यों एवं मूल्यों का प्रतिस्थापन किा जाता है। शिक्षा को सैद्धान्तिक, दार्शनिक-अनुसंधानों से विकसित किया जा सकता है।

(2) क्रियात्मक अनुसंधान-इस प्रकार के शोध-कार्यों से स्थानीय समस्याओं का अध्ययन किया जाता है, जिससे शिक्षण को प्रक्रिया में सुधार तथा विकास किया जाता है। इनमें ज्ञान-वृद्धि नहीं की जाती है। इन्हें प्रयोगात्मक अनुसन्धान भी कहते हैं।

शोध-उपागम की दृष्टि से-शोध कार्यों में तथ्यों का अध्यापन करने के लिए दो उपागों का प्रयोग किया जाता है-

(1) अनुदैध्य उपागम तथा (2) कटाय उपागम।

(1) अनुदैर्ध्य उपागम-यह शब्द वनस्पति विज्ञान से लिया गया है। जब किसी पौध का अध्ययन बीज बोने से लेकर फल आने तक किया जाता है तब तसे अनुदैर्ध्य उपागम कहा जाता है। इसे उपागम भी कहा जाता है, क्योंकि अध्ययन में समय प्रमुख घटक होता है। ऐतिहासिक, इकाई तथा उत्पत्ति सम्बन्धी अनुसन्धान विधियों में इसी उपागम का प्रयोग किया जाता है।

(2) कटाव उपागम-पह शब्द भी वनस्पति विज्ञान का है। जब किसी पौधे के तने, पत्तो या जड़ तथा अन्य किसी अंग के स्वरूप का अध्ययन करना होता है तब किसी पौधे के उसे अंग का कटाव करके अध्ययन कर लिये जाते है । तब उसे कटाय उपागम को संज्ञा दो जाती है। इसमें समय का महत्व नहीं होता है ।प्रयोगात्मक तथा सर्वेक्षण विधियो में प्रयोग किया जाता है।

बोध प्रश्न

1. अनुसंधान की अवधारणा से आप क्या समझते हैं ?

2. क्रियात्मक अनुसंधान से आप क्या समझते हैं ?